-:: मानव व्यवहार शिक्षा ::-

1. मानव संचेतना
2. मानवीय अभिव्यक्ति एवं संप्रेषणा
3. व्यवस्था एवं समाधान
4. मानवीय कर्त्तव्य एवं दायित्व

प्रायोगिक परियोजना

व्यवसाय एवं व्यवहार [के दो]

विषय वस्तु

1. क. मानव संचेतना की क्षमता :- अक्षय बल एवं अक्षयशिक शक्ति

ख. मानव संचेतना का स्वरूप :-

1. संवेदन शीलता :- निर्वाह कर ने की क्षमता
2. संज्ञान शीलता :- पहियानने की क्षमता

ग. संचेतना की नित्यगति :-

1. जाने हुए को मानना
2. माने हुए को जानना

---

2. मानवीय अभिव्यक्ति एवं संप्रेषणा

क. परावर्त्तन :- 1. प्रणाली
2. पद्धति एवं
3. नीति

प्रणली:- रुचिमूलक ———— अव्यवस्था एवं समस्या
मूल्य मूलक ———— व्यवस्था एवं समाधान
लक्ष्य मूलक ———— व्यवस्था एवं समाधान तथा प्रमाणिकता.

पद्धति:- मानवीय पद्धति ————
अमानवीय पद्धति ————

/-2-/

//2//

नीति:- अर्थ का सदुपयोग (धर्म नीति)
अर्थ की सुरक्षा (राज्यनीति)

प्रभिव्यक्ति :- परिभाषा (अभ्युदय के अर्थ में व्यक्त होना)
प्रभ्युदय (सर्वतोमुखी विकास)
सर्वतोमुखी (व्यवसाय, व्यवहार, विचार एवं अनुभूति की अभिव्यक्ति)
व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा अन्तर राष्ट्रम की अभियम्क्ति।
अमानवीयता से मानवीयता की अभियक्ति।
मानवीयता से अतिमानवीयता की अभिव्यक्ति।
प्रिय, हित, लाभ, न्याय, धर्म एवं सत्यात्मक दृष्टि की अभिव्यक्ति।
मूल्य, चरित्र व नैतिकता की अभिव्यक्ति।
शिक्षा, व्यवस्था एवं आचरण की अभिव्यक्ति।
दर्शन, वाद, शास्त्र, साहित्य एवं कला की अभिव्यक्ति।

व्यवसाय= उत्पादन = उपयोगिता मूल्य एवं कला मूल्यों की स्थापना।
6 व्यवहार - संबंधोकी पहिचान तथा मूल्यों कर निर्वाह

विचार - यथार्थता
वास्ताविकता
व सत्यता की संप्रेषणा

अनुभूति - ×. 1. प्रमाणिकता की अभिव्यक्ति
×. 2. समाधान की संप्रेषणा

व्यक्ति - स्वयं के प्रति विश्वास.
श्रेष्ठता के सम्मान

परिवार - सच्चरित्र, समाधान, समृद्धि,

समाज - संस्कृति (मानवीय संस्कार परम्परा)
सभयता (मानवीय संबंधो की निर्वाह परंपरा)
विधि (मानवीय आचार संहितासहिंता)
व्यवस्था (न्याय सुगमता, विनिमय सुगमता)

राष्ट्र - संविधान की प्रभाव सीमा
अन्तरराष्ट्र - सह अस्तित्तत्व
अमानवीयता से मानवीयता -
सतर्कता
क्रिया पूर्णता

//3//

मानवीयता से प्रति मानवीयता – सतर्कता व सजगता
पूर्ण जागृति व
आचारण पूर्णता.

प्रिय – इंद्रिय सकिन्कर्ण

हित – स्वास्थ्यवर्धक

लाभ – अधिक लेकर कम देना

न्याय – स्थापित संबंधो में निहित स्थापित मूल्यों का निर्वाह । (सात संबंध एवं अट्ठरह मूल्य)

मूल्य – जीवन मूल्य – (सुख, शांति, संतोष, आनंद)
– मानव मूल्य – (धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा)
– सामाजिक मूल्य – स्थापित मूल्य–9
शिष्ट मूल्य –9
18

– स्थापित मूल्य
– व्यवसाय मूल्य– उपयोगिता मूल्य
सुंदरता मूल्य

– उपयेगिता मूल्य
1. सामान्य आकांक्षा– आहार, आवास, अलंकार,.
2. महत्वाकांक्षा – दूर भ्रमण, दूर गमन दूर दर्शन .

चरित्र – मानवीय चरित्र
– अमानवीय चरित्र
– अतिमानवीय चरित्र

नैतिकमा – धर्म नैतिकता, राज्य नैतिकता (अर्थ का सदुपयोग एवं अर्थ की सुरक्षा)

अर्थ की परिभाषा – (तन + मन + धन) का अविभाज्य वर्तमान

शिक्षा – शिष्टतापूर्ण दृष्टि की जागृति

प्रत्यावर्तन
=======

1. आस्वादन – विषयास्वादन, रसास्वादन
2. तुलन – प्रियाप्रिय, हिताहित, लाभालाभ, न्यायन्याय, धर्माधर्म, सत्यासत्य ।
3. चिन्तन – प्रिय वास्तविकता, यथार्थता, सत्यता का चिंतन ।
4. बोध – सत्यबोध, आत्मबोध ।
5. अनुभूति – सत्ता में अनुभूति
   1. आस्तित्व में अनुभूति
   2. सत्य में अनुभूति

=======

व्यवस्था – न्याय सुलभता, विनिमय सुलभता ।

समाधान – जाने हुए को मानना
माने हुए को जानना

समाधान – सुख =शांति = संतोष ।

-::मानवीय कर्त्तव्य एवं दायित्व ::-
==========

कर्त्तव्य – 1. सेवा :5 उत्पादन के सहायक कार्य, सहयोगी कार्य
– सहभागी कार्य

2. उत्पादन :5

दायित्व – ~~अविकि~~ अविकसितके ~~समर्थ~~ विकास के लिए सहायक
– समान के साथ निर्वाह
– अधिक विकसित के साथ सम्मान

प्रा यो गि क प रि यो ज ना
== == = = = = = = = =

मूल्य – समझे हुए को कार्य व्यवहार में दर्शाना
– यही मूल्यकांन पद्धति हो ।

1. सर्वेक्षण, परीक्षण एवं निरीक्षण विधि :-

क. प्राप्त शिक्षा का व्यवहार रूप, किन किन संबंधों में सम्पन्न हुआ ।

ख. प्राप्त शिक्षा में व्यवहार रूप के संभावनाओं के विभिन्न आयाम ।
सुगमता तथा प्रतिकूलता ।

जैसे :- परिवार उसके सभी आयाम, समाज और उसके सभी आयाम ,
राष्ट्र तथा उसके सभी आयाम ,
अन्तरराष्ट्र एवं उसके सभी आयाम,

ग. व्यक्तित्व के आधार पर सर्वेक्षण , निरीक्षण एवं परीक्षण के आयाम ।

व्यक्तित्व नं. 1. श्रेष्ठ व्यक्तित्व – जो स्वयं गलती व अपराध न करें ।
2. दूसरों को अपराध व गलती न करने दें ।

व्यक्तित्व नं. 2. स्वयं गलती एवं अपराध न करें ।
दूसरों की गलती व अपराध से सहमति या संबंध न रखें ।

व्यक्तित्व नं. 3. गलती करने वालों के साथ गलती न करें ।
अन्याय करने वालों के साथ अन्याय न करें ।

व्यक्तित्व नं. 4. स्वयं गलती न अपराध करना ।
दूसरो से गलती व अपराधकराना ।
इसका सर्वेक्षण सभी आयामों में कराना ।

परीक्षणात्मक कार्यक्रम :- 1. मानव मूल्य के संबंध या संदर्भ में अविकसित का विकास में सहायता करना ।

ग्रामीण समस्यायें :- 1.
2.
3.
4.